।। श्रीहरिः ।।

* श्रीगणेशाय नमः *

प्राक्कथन

प्रिय पाठकवृन्द,

सादर जय श्रीजगन्नाथ ।

'प्रकल्पारम्भ' नामक यह ग्रन्थ धर्मसङ्घ पीठपरिषद्, आदित्य-वाहिनी-आनन्दवाहिनीकी ओरसे सम्पादित तथा स्वस्तिप्रकाशन संस्थासे प्रकाशित ऐसी कृति है जो सङ्गठनको बल देनेके उद्देश्यसे प्रस्तुत की गई है । प्रकल्पारम्भका तात्पर्य यहाँ कोई नवीन प्रकल्प आरम्भ होनेसे नहीं; अपितु वे महानुभाव जो संस्था द्वारा पूर्वसे ही चल रहे अभियानमें सम्मिलित हो कर कार्य करना चाहते हैं, वे किस प्रकारका प्रकल्प आरम्भ करें; उस विधाका समावेश इस पुस्तिकामें होनेके कारण इसका नाम प्रकल्पारम्भ रखा गया है । अर्थात् सदस्यों द्वारा आरम्भमें क्रियान्वित किये जाने बाला प्रकल्प।

बहुतसे महानुभावोंकी ओरसे यह भावना व्यक्त की जाती है कि पूज्यपाद द्वारा संस्थापित इस संस्थाके महान् उद्देश्यको साकार करनेमें हम किस प्रकार भूमिका प्रस्तुत कर सकते हैं । ऐसे महानुभावोंके लिए यह पुस्तिका अत्यन्त उपयोगी है ।

निश्चितरूपसे प्रायः लोग तो भारतको अखण्ड करना, सनातन शासनतन्त्रकी स्थापना करना जैसे लक्ष्यको सुन कर ही चौंक जाते हैं । ऐसे लोगोंकी मान्यता होती है कि इस कार्यको करनेके लिए बहुत बड़ा सङ्घर्ष मोल लेना होगा । अतः वे इसे इस पवित्र कार्यको करनेमें अपनी असमर्थताका भ्रम पाले हुए हैं । किन्तु वास्तविकता यह है कि बहुत बड़े सङ्घर्षकी कल्पना न कर; पूज्यपाद शङ्कराचार्य महाभाग द्वारा दिये गये छोटे-छोटे प्रकल्पोंको अपने-अपने क्षेत्रमें

क्रियान्वित कर; सरलतासे हम महान् लक्ष्यको साकार कर सकते हैं। ये छोटे लगने वाले प्रकल्प परमाणु-बमकी तरह अत्यन्त प्रभावशाली हैं । छोटे लगने पर भी इनका परिणाम अत्यन्त बड़ा एवं दूरगामी है। इस पुस्तिकामें उन्हीं छोटे-छोटे प्रकल्प तथा उनके क्रियान्वयनकी पूरी विधाको गागरमें सागरमे समान समेटा गया है । जितने प्रकल्प इस लघुकाय पुस्तिकामें हैं, जैसे साप्ताहिक सङ्कीर्तन, सत्सङ्ग, सेवा प्रत्येक हिन्दू परिवारसे प्रतिदिन एक घण्टा और एक रुपए, सुरक्षा-प्रशिक्षण प्रकल्प आदि; केवल इनका ही क्रियान्वयन सम्पूर्ण भारतमें हो जाए तो हमें अपने समग्र लक्ष्य प्राप्त हो जावें तथा भारत विश्वका सर्वशक्तिसम्पन्न राष्ट्र बन जावे । अत: अपने सामर्थ्यमें, अपने क्षेत्रमें इन लघुप्रकल्पोंको क्रियान्वित कर इस महान् कार्यमें सहयोगी बनें।

आधुनिक व्यवस्थामें ढले हुए जीवनमें प्रतिदिन एक घण्टा निकालना प्राय: लोगोंको कठिन लगता है । अत: आरम्भमें सप्ताहमें एक दिन एक घण्टेका समय निकाल कर अभियान प्रारम्भ हो; फिर धीरे-धीरे उसे प्रत्येक दिन तक लाया जावे इस क्रमसे इस पुस्तिकामें प्रकल्प, तथा प्रकल्पके क्रियान्वयनकी सम्पूर्ण विधाका वर्णन किया गया है ।

''सङ्घे शक्ति: कलौ युगे''

''स्वस्त्यस्तु विश्वस्य...।''

सादर नारायण स्मरण ।

वैशाख कृष्ण षष्ठी
मेष संक्रान्ति
विक्रम संवत्- २०७७ प्रकाशक
तदनुसार १३.०४.२०२०
पुरी (ओडिशा)

।। श्रीहरिः ।।

* श्रीगणेशाय नमः *

प्रकल्पारम्भ

"सनातनधर्म जिसे वैदिकधर्म, वर्णाश्रमधर्म या हिन्दूधर्म भी कहा जाता है । धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्षकी सिद्धीका एकमात्र मार्ग सनातनधर्मका अनुपालन ही है । सनातनधर्मकी रक्षासे ही सभी प्राणियोंकी रक्षा तथा सुखशान्तिपूर्ण विकसित जीवन सम्भव है । सनातन सिद्धान्तोंके आधार पर ही सच्चिदानन्दस्वरूप सर्वेश्वर इस सृष्टिके सृजन, पालन तथा संहरणादि कृत्योंका सञ्चालन करते हैं । समय-समय पर सनातन सिद्धान्तोंमें शिथिलता, ह्रास तथा सङ्कट उपस्थित होने पर भगवान् स्वयं अवतार धारण कर या अपने प्राणप्यारे भक्तोंको प्रकट कर सनातन धर्मकी रक्षा करते हैं ।

चातुर्वर्ण्यं त्रयो लोकाश्चत्वारश्चाश्रमाः पृथक् ।
भूतं भव्यं भविष्यञ्च सर्वं वेदात्प्रसिध्यति ।।

(मनुस्मृति १२.९७)

अर्थात् भूत, भविष्य और वर्तमान सभी कालोंमें तथा सभीके लिए वेद (वैदिक सनातनधर्म)की उपयोगिता एक समान रहती है । इस रॉकेट, कम्प्यूटर, एटॅम तथा मोबाईलके अत्याधुनिक युगमें भी दार्शनिक, वैज्ञानिक तथा व्यावहारिक धरातल पर सनातन वैदिक-सिद्धान्तोंकी उपयोगिता यथावत् चरितार्थ है । किन्तु वर्तमान समयमें विश्वस्तर पर दिशाहीन, वेदविहीन विधासे विकासको परिभाषित और क्रियान्वित करनेसे तथाकथित विकासके गर्भसे भयङ्कर विनाश तथा विस्फोटक निकल रहा है । इस दिशाहीनताका दुष्परिणाम यह है कि, पृथ्वीके धारक, यज्ञके सम्पादक, सनातन मानबिन्दुओंका द्रुत गतिसे लोप हो रहा है । गोवंश, ब्राह्मण, वेद, सती, सत्यवादी, निर्लोभ व्यक्ति, गङ्गा-यमुनादि दिव्य नदियाँ, वन-वनस्पति-औषधादि सभी

दिव्य वस्तुओंका विलोप हो रहा है । ऊर्जाके आस्तिक नास्तिक उभय सम्मत् जो तत्त्व पृथ्वी, पानी, प्रकाश तथा पवन हैं; जिनके बिना हमारा जीवित रहना सम्भव नहीं है; वे तत्त्व आज विकृत, दूषित तथा कुपित कर दिए गए हैं । पूरा विश्व आज इस विनाशक विकासकी चपेटमें आचुका है । तथा प्रत्येक व्यक्ति किसी ना किसी अंशमें इसका अनुभव भी कर रहा है । किन्तु वैचारिक दिशाहीनता तथा महायन्त्रोंकी दासताके चपेटमें आकर अनुभवमें आनेके बाद भी विश्व इस दिशाहीनतासे मुक्तिके मार्ग पर विचार नहीं कर पा रहा हैं । वहीं विश्वमें कुछ विचारक भी हैं जो सस समस्याके समाधानकी ओर विचार कर रहे हैं । चाहे भारतीय विचारक हों या पाश्चात्य विचारक हों वर्तमान समयमें सभी विचारक अन्दर-अन्दर जान चुके है कि यदि विश्वको विनाशकी विभीषिकासे बचता है तो भारतीय मनिषियोंके द्वारा अनुपालित सनातन वैदिक सिद्धान्त और जीवनचर्या एवं धार्मिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक आदि व्यवस्थाओंको सनातनधर्ममें अनुरूप ही अपनाना होगा ।

भारतवर्षमें निवास करनेवाले प्रत्येक व्यक्तिका जीवन सनातन विधाके आधार पर ही क्रियान्वित था फिर चाहे वह उन व्यवस्थाओंके शास्त्रिय और वैज्ञानिकादि आधारको जानता हो । कहनेका भाव यह है कि सनातन वैदिक व्यवस्थाके आधार पर सहज ही सभीका जीवन ढला हुआ था । और बाल्यकालसे ही उन्हें सनातन मर्यादाकी सीमामें विद्या तथा कलामें पारङ्गत बनानेका प्रकल्प घरोंसे ही प्रारम्भ हो जाता था । जिसके कारण भारतीय विद्या एवं कलाका स्तर लोकोत्तर था । किन्तु आजकी स्थितिमें बच्चोंको ऐसे संस्कार और प्रशिक्षण दिशाहीन षडयन्त्रके अन्तर्गत चल रहे शिक्षातन्त्रसे प्राप्त होना जहाँ असम्भव है वहाँ ठीक इसके विपरीत भयङ्कर चरित्रनाशक एवं भारत, भारतीयता और चिरपुरातन वैदिकधर्ममें अनास्था उत्पन्न करनेका

पाठ पढ़ाया जा रहा है । प्रायः इलेक्ट्रोनिक् एवं प्रिन्टमीडिया, सिनेमा, सोशियलमिडिया इत्यादिके माध्यमसे भी यही कार्य बड़ी तेज गतिसे चल रहा है । दिशाहीनता इतनी है कि घरोंसे भी अब संस्कार प्राप्त होना प्रायः दुर्लभ हो गया है । आज प्रायः भारतीय व्यक्तियोंकी विचारधारा अंग्रेजोंके षड्यन्त्रके आधारपर ही बन चुकि है । १५ अगस्त १९४७को तथाकथित स्वतन्त्रता ही प्राप्त हुई; वास्तवमें आज भी वैचारिक परतन्त्रताकी बेड़ियोंसे हमारा राष्ट्र बंधा हुआ है । शिक्षा, रक्षा, संस्कृति, अर्थ, सेवा, चिकित्सादिके प्रकल्प विदेशोंकी नकलके रूपमें तैयार कर क्रियान्वित हैं, जब कि ये सभी प्रकल्प भारतीय परम्पराके आधार पर ही सर्वोत्कृष्ट हैं ।

विश्वकी सार्वभौम वंश परम्परा तथा गुरुपरम्पराका आरम्भ भगवान् श्रीमन्नारायणसे होता है । श्रीमन्नारायणके बाद उनके पुत्र तथा शिष्यके रूपमें श्रीब्रह्माजी, ब्रह्माजीके बाद श्रीमन्नारायण महर्षि वसिष्ठ, श्रीवसिष्ठके बाद श्रीशक्ति श्रीपराशर, श्रीकृष्णद्वैपायन वेदव्यास फिर श्रीशुकदेव, श्रीगौड़पादाचार्य, श्रीगोविन्दभगवत्पादाचार्य तथा दसवें स्थान पर भगवत्पाद शिवावतार आद्य शङ्कराचार्य हैं । भगवान् शङ्कराचार्य द्वारा प्रतिष्ठित चार पीठोंमें ऋग्वेदीय पूर्वाम्नाय गोवर्द्धनमठ पुरीपीठके प्रथम शङ्कराचार्य श्रीपद्मपादाचार्य महाभाग हुए तथा उनकी परम्परामें वर्तमान श्रीशङ्कराचार्यजी १४५वें स्थान पर हैं । अर्थात् वर्तमान् पुरी पीठाधीश्वर अनन्त श्रीविभूषित श्रीमज्जगद्गुरु शङ्कराचार्य स्वामी निश्चलानन्दसरस्वतीजी महाराज आद्यशङ्कराचार्यसे १४५वें स्थान पर तथा भगवान् श्रीमन्नारायणसे १५५वें स्थान पर हैं । विश्वकी सभी गुरुपरम्पराऐं इसी मूल सार्वभौम गुरुपरम्पराकी शाखा-प्रशाखाओं सदृश हैं । अर्थात् शङ्कराचार्य गुरुओंके भी गुरुः; सार्वभौम जगद्गुरु होते हैं । किन्तु आज विश्व, विशेषरूपसे हिन्दू अपनी इस मूल गुरुपरम्पराको भूल कर उससे सुदूर होकर अनेक प्रकारके पथों,

धार्मिक तथा सामाजिक संस्थाओं एवं संगठनोंमें विभक्त हो चुका है । आज विश्वस्तर पर सङ्गठनोंके नाम पर भी परस्पर ताल-मेल न होनेके कारण विभिन्न सङ्गठन ही विघटनमें हेतु बन चुके हैं । ऐसी स्थितिमें अपनी मूलपरम्परामें आना आवश्यक है ।

बहुत बार यह प्रश्न उठता है कि जब शङ्कराचार्य सनातन धर्मके सार्वभौम धर्मगुरु हैं, सम्पूर्ण सनातनधर्मी उनके अनुयाई हैं; तो ऐसी स्थितिमें उन्हें पृथक्से संस्था या सङ्गठन बनानेकी क्या आवश्यकता पड़ी । तो इस विषयमें ध्यान केन्द्रित करनेकी आवश्यकता है कि, भगवान् आद्य शङ्कराचार्य महाभाग एवं उनसे भी पूर्व गुरुओं द्वारा हुई क्रान्तियोंका काल राजतन्त्रिक व्यवस्थाका काल था; किन्तु वर्तमान समयमें लोकतन्त्रिक व्यवस्था है । ऐसे समयमें कार्य करनेके लिए एक पृष्ठभूमिके रूपमें एक सार्वभौम संस्थाकी महती आवश्यकता है; जो समग्र हिन्दू समाजको एक मञ्च पर ला सके ।

पूर्वोक्त विषयों पर ध्यान केन्द्रित कर ही पूर्वाम्ना गोवर्द्धनमठ पुरीपीठाधीश्वर श्रीमज्जगद्गुरु शङ्कराचार्य स्वामी निश्चलानन्दसरस्वतीजी महाराजने वैदिक ज्ञानविज्ञानके आधार पर यह निर्धारित किया कि पूर्वोक्त समस्याएँ कोई मूल समस्या नहीं है । मूल समस्या है सनातन सिद्धान्तोंके आधार पर शासनतन्त्र प्राप्त न होना । इस विषयको ध्यानमें रखते हुए पूज्यपाद शङ्कराचार्य महाभाग ने सर्वभूतहृदय धर्मसम्राट् स्वामी श्रीहरिहरानन्दसरस्वती 'करपत्री'जी महाराजकी रीति-नीतिके अनुसार वैश्विक-वैचारिक-क्रान्तिको जन्म देनेके लिए शङ्कराचार्य पद पर आसीन होनेके दो माहके भीतर ही श्रीरामनवमी (चैत्र शुक्ल नवमी), शनिवार, पुष्पनक्षत्र, धृति, मित्रयोग, कर्कराशिस्थ चन्द्र, विक्रम संवत् २०४९ तदनुसार ११ अप्रैल १९९२ में पीठपरिषदकी स्थापना की । तथा पीठपरिषद्के अन्तर्गत आदित्य-वाहिनीकी स्थापना पौष शुक्ल तृतीया विक्रम संवत् २०५० शुक्रवार,

धनिष्ठा, मकरसंक्रान्ति, तदनुसार १४ जनवरी १९९४में की गयी । तदनन्तर पीठपरिषदके अन्तर्गत आनन्दवाहिनीकी स्थापना श्रावण शुक्ल सप्तमी, शनिवार, स्वातिनक्षत्र, सिद्धयोग, तुलाराशि विक्रम संवत् २०५१ तदनुसार १३ अगस्त १९९४ में की गयी ।

संस्थाका नाम

धर्मसङ्घ पीठपरिषद्, आदित्यवाहिनी-आनन्दवाहिनी हिन्दू राष्ट्रसङ्घ, राष्ट्रोत्कर्ष अभियान, सनातन सन्तसमिति, रामराज्यपरिषद् मूलसंस्था धर्मसङ्घ पीठपरिषद् ही है । पीठपरिषद्के अन्तर्गत ही अन्य ईकाइयाँ कार्य करती हैं ।

संस्थापक

ऋग्वेदीय पूर्वाम्नाय गोवर्द्धनमठ-पुरीपीठाधीश्वर श्रीमज्जगद्गुरु शङ्कराचार्य स्वामी निश्चलानन्दसरस्वतीजी महाराज ।

संस्थाका नाम लक्ष्य

१. अन्योंके हितका ध्यान रखते हुए हिन्दुओंके अस्तित्व और आदर्शकी रक्षा; राष्ट्रकी एकता अखण्डता और सुरक्षा ।
२. धर्मनियन्त्रित, पक्षपातविहीन, शोषणविनिर्मुक्त, सर्वहितप्रद, सनातन शासनतन्त्रकी स्थापनाके अनुकूल पृष्ठभूमि निर्मित करना ।
३. सनातन मानबिन्दुओंके रक्षार्थ कटिबद्धता ।

संस्थाका चिह्न

सनातन चिह्न — उदीयमान सूर्यके मध्य स्वस्तिक

आयुके आधार पर सङ्गठनके अवान्तर प्रकल्प

(सदस्योंकी आयुके आधारपर एक ही संस्थामें विविध धाराएँ)

आदित्यवाहिनी तथा बाल-आदित्यवाहिनी

५से १४ वर्षके बालक एवं किशोर बाल-आदित्यवाहिनीके एवं १५से ४५ वर्षके युवक-आदित्यवाहिनीके सदस्य होते हैं ।

पीठपरिषद्

४५ वर्षसे अधिक आयुके महानुभाव पीठपरिषद्के सदस्य होते हैं । सेवानिवृत्तिके बाद विशेषरूपसे समय लगाकर सङ्कीर्तन एवं सत्सङ्गका प्रकल्प चलाना तथा मार्गदर्शक टोलीके रूपमें कार्य करना इनका दायित्व है ।

हिन्दूराष्ट्रसङ्घ तथा राष्ट्रोत्कर्ष अभियान

इन दोनों संस्थाओंमें पीठपरिषद्, आदित्यवाहिनी एवं आनन्द-वाहिनीके सदस्य ही कार्य करते हैं, जिन्हें भारतको हिन्दूराष्ट्र उद्घोषित करनेमें स्वस्थ भूमिका प्रस्तुत करने तथा राष्ट्रोत्कर्षके अभियानोंको क्रियान्वित करनेका विशेष दायित्व प्राप्त होता है ।

सनातन सन्तसमिति

इसके अन्तर्गत अखण्ड भारतकी सीमाके वे सन्त महापुरुष होते हैं, जो पूज्यपाद शङ्कराचार्य महाभागकी वैदिक परम्पराप्राप्त भावनाके अनुरूप विविध क्षेत्रोंमें धर्म, अध्यात्म तथा राष्ट्रको लेकर चेतनाविस्तारका कार्य करते हैं; जो दायित्व प्रत्येक सन्तको शास्त्रिय परम्परासे प्राप्त है ।

रामराज्य-परिषद्

धर्मसम्राट् पूज्यपाद स्वामी करपात्रीजी महाराज द्वारा संस्थापित एक राजनैतिक दल है; जिसका उद्देश्य धर्मनियन्त्रित सनातन शासनतन्त्र स्थापित करना है । पूज्य शङ्कराचार्य महाभाग द्वारा लम्बे समयसे निष्क्रिय इस परिषद्का पुनर्गठन किया गया । किन्तु इस परिषद्की कार्यशैलीमें किञ्चित् परिवर्तन किया गया है । धर्मसम्राट्के समयमें यह परिषद् चुनावकी प्रक्रियामें सम्मिलित हो कर राजनैतिक दलके रूपमें कार्य करता था । किन्तु वर्तमान समयमें पूज्यपादके मार्गदर्शनमें चुनावकी प्रक्रियासे दूर रहते हुए राजनैतिक दलों एवं राजनेताओंके शोधनका कार्य करता है । उद्देश्य पूर्ववत् 'धर्मनियन्त्रित, पक्षपातविहीन, शोषणविनिर्मुक्त, सर्वहितप्रद,सनातन शासनतन्त्रकी स्थापना' है ।

सङ्गठनका स्वरूप

सम्पूर्ण सृष्टिसे सङ्गठनका स्वरूप प्रकट होता है । महासर्गके आरम्भमें पञ्चभूत पृथक्-पृथक् थे; जिसके कारण सृष्टिरचनाका कार्य आगे नहीं बढ़ा । तब ईश्वरने आपके सङ्कल्पसे पाँचो भूतोंको आपसमें मिलाकर पञ्चीकरण कर दिया जिससे पञ्चीकृत पञ्चमहाभूत, उनके तारजम्यज सङ्घात और इन्द्रियप्राणान्तःकरण, देहादि समग्र सूक्ष्मस्थूल जगत्की संरचना हुई । अर्थात् ईश्वर द्वारा भूतोंको मिलाना ही यहाँ प्रमुख बिन्दु है ; जो सङ्गठनके महत्त्वको प्रकाशित कर रहा है । अतः सृष्टिके आरम्भसे ही सच्चिदानन्दस्वरूप सर्वेश्वर हमें सङ्गठनका महत्त्व बता रहे हैं । ब्रह्मको ले कर भी विचार करें तो 'एक सद्विप्रा बहुधा वदन्ति' (ऋग्वेद २.३.२२.६). 'एकं रूपं बहुधा यः करोति' (कठो. २.२.१२), 'इन्द्रो मायाभिः पुरुरूप ईयते' (ऋग्वेद. ....), 'सदेव सोम्येदमग्र आसीत्' (छान्दो. ६.२.१), 'परास्य शक्तिर्विविधैव श्रूयते' (श्वेता. ६.८), 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' (छादो. ३.१४.१), 'एकस्तथा सर्वभूतान्तरात्मा रूपं रूपं प्रतिरूपो बहिश्च' (२.२.१०) आदि अनेकोंमें अनुगत एकका प्रतिपादन करने वाले वेद वचनोंका तात्पर्य एक ही ब्रह्मकी विविध शक्तियोंके बीज मायायोगसे विश्वप्रपञ्चकी अभिव्यक्ति सङ्गठनके स्वरूपको प्रदर्शित करती है ।

बृहदारण्यक

भगवान् श्रीगणेश प्रथमपूज्य हैं । गणेश शब्द पर विचार करें तो 'गणानामीशः गणेशः' जो गणोंके ईश, नायक है वे गणेश हैं । गणेश शब्द सङ्गठन और नायक दोनोंका प्रतिपादन करने वाला है । गणेशमें गण शब्द समूह या सङ्गठन का वाचक है तथा ईश शब्द नायक अर्थमें प्रयुक्त है । अर्थात् एक ही शब्दके माध्यमसे सङ्गठन और नायक दोनोंके महत्त्वका प्रतिपादन होता हैं । जिनमें सङ्गठनशक्ति तथा नायकत्वरूप दोनों प्रकारकी क्षमता हो वही प्रथम पूज्य होते हैं।

इस प्रकार भगवान् गणनायकसे हमें सङ्घशक्तिको प्रथम प्रोत्साहन देनेकी शिक्षा प्राप्त होती है ।

श्रीदुर्गासप्तसतीमें सभी देवताओंकी सम्मिलित शक्तिसे प्रकट भगवती चण्डिकाके स्वरूपका वर्णन है । 'नि:शेष देवगण शक्तिसमूह मूर्त्या' कह कर एकही स्वरूपमें समष्टिशक्ति अर्थात् सङ्गठनके ऐसे स्वरूपका उदाहरण है जहाँ समग्र देवसेना (सङ्गठन)का कार्य एक ही स्वरूपसे क्रियान्वित हो रहा है । अत: एक-एक व्यक्ति उपासना द्वारा देवताओंका अनुग्रह प्राप्त कर तथा समष्टिमें तादात्म्यापत्तिके बल पर अनेक व्यक्तियोंका सकता है ।आधुनिक-विज्ञान भी कॉस्मिक एनर्जी (सम्मिलित ऊर्जा)के माध्यमसे सृष्टिका सञ्चालन मानता है । यह भी सनातन सिद्धान्तका अनुगमन मात्र है । तथा सङ्गठनका उदाहरण है ।

कठिनसे कठिन कार्यको चीटियाँ सङ्घशक्तिके बल पर ही कर लेतीं हैं । सबका सार है कि, दार्शनिक, वैज्ञानिक तथा व्यावहारिक धरातल पर सङ्घशक्तिका अत्यन्त महत्त्व है । फिर इस कलिकालमें तो विशेषरूपसे सङ्घमें ही शक्ति है; 'सङ्घे शक्ति: कलौ युगे'। मिलना-जुलना मानवजीवनका ही नहीं अपितु सभी प्रणियोंका स्वभाव है । जैसे गोवंशको ही देखिये; वह सदैव एक साथ रहते हैं । गोवंशके सदा एक साथ बैठनेके स्वभावसे शिक्षा ले कर ही मनुष्योंकी सभाके लिए भी गोष्ठी शब्द कहा जाता है । हरिण, गज आदि पशुओं तथा पक्षियोंमें भी साथ रहनेका सहज स्वभाव है । प्राय: मनुष्य भी सदा एक स्थानपर रहने वाले हैं । इसी आधार पर ग्राम-नगर आदि बसे हैं । अत: साथ मिलकर रहना प्राणिमात्रका सहज स्वभाव है । हम अपना जीवन देखें तो एक दिनमें हम कितने ही लोगोंसे मिलते, व्यवहार करते हैं । किन्तु समष्टि (धर्म व राष्ट्र)को ले कर मेल-जोल लुप्तप्राय है ।

समाजको सङ्गठनका रूप प्रदान करनेके लिए सबसे पहले हमें एक जगह बैठना आवश्यक है । प्राय: लोग एक जगह बैठ ही नहीं पाते और यदि बैठते भी हैं तो व्यावसायिक, प्रशासनिक, राजनैतिक गोष्ठियोंमें या टी-पार्टी आदिमें मौज-मस्ती पूर्वक । अत: सङ्गठित होनेके लिए सर्वप्रथम हमें पवित्र उद्देश्यको लेकर ,क साथ बैठना आवश्यक है । इस विषयको ध्यानमें रखते हुए ही साप्ताहिक प्रकल्पका स्वरूप बनाया गया है ।

पूज्यपाद शङ्कराचार्य महाभागने संस्थाका स्वरूप पूरे परिवारको सङ्गठनसे जोड़नेकी योजनाके आधार पर निर्मित किया है । जिसमें सभी आयुके पुरुषवर्ग एवं देवियोंको तथा समाजके प्रत्येक वर्गके व्यक्तियोंको कार्य करनेका अवसर प्राप्त है । अपने-अपने घरोंसे ही सामञ्जस्यपूर्ण सङ्गठन आरम्भ कर विश्वस्तरीय सङ्गठनकी यह अनुपम विधा है ।

साप्ताहिक प्रकल्प

सभीकी सुविधाके आधार पर सप्ताहमें एक दिन तय कर किसी भी देवालय, सार्वजनिकस्थान या सर्वसम्मतिसे निर्धारित स्थान पर सेवा, सङ्कीर्तन, सत्सङ्ग, ग्रन्थवाचन, सद्भावपूर्णसंवादका प्रकल्प चलावें ।

सबसे पहले- ''धर्मकी ..... जय हो, अधर्मका ..... नाश हो, प्राणियोंमें .....सद्भावना हो, विश्वका..... कल्याण हो, गोमाताकी..... जय हो, गोहत्या ..... वन्द हो, भारत ..... अखण्ड हो, श्रीजगन्नाथ महाप्रभुकी ..... जय, जगद्गुरु शङ्कराचार्य भगवान् की..... जय, धर्मसम्राट् स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराजकी ..... जय, हर-हर.... महादेव'' इस प्रकार उद्गारपूर्वक जयघोषसे गोष्ठीका आरम्भ करें । पश्चात् -

संकीर्तन -

श्रीहनुमान चालिसाका पाठ कर १५ मिनट राम-कृष्णादि भगवन्नामका सङ्कीर्तन करें ।

सत्सङ्ग एवं ग्रन्थवाचन

तत्पश्चात् गीताप्रेससे प्रकाशित कल्याण 'सत्कथा-अङ्क'से एक सत्कथाका वाचन कर सभीको सुनावें; पश्चात् पुरीके १४३वें जगद्गुरु शङ्कराचार्य स्वामी श्रीभारतीकृष्णतीर्थ महाभाग विरचित तथा स्वस्तिप्रकाशनसंस्थासे प्रकाशित 'भारत-वैभव' नामक ग्रन्थका एक अध्याय वाचन कर सुनावें; पश्चात् स्वस्तिप्रकाशनसे प्रकाशित 'दिव्यानुभूति' ग्रन्थका एक अध्याय सुनावें, जगद्गुरु शङ्कराचार्य स्वामी श्रीनिश्चलानन्दसरस्वतीजी महाराज द्वारा रचित तथा स्वस्ति-प्रकाशनसे प्रकाशित प्रचारप्रकल्प, नीतिसावित्री, नीतिचालीसा, नीतिनिधि, विकासविमर्श इत्यादि सभी ग्रन्थोंका क्रमसे (एक पूर्ण हो जाने पर दूसरा) एक-एक अध्याय वाचन करें । पश्चात् ...

सद्भावपूर्णसम्वाद

राष्ट्रमें चल रही समस्याओं पर पूज्य जगद्गुरुजीसे यूट्युब, फेसबुक आदि मठके प्रामाणिक सोसियल-पेजके माध्यमसे प्राप्त दृष्टिकोणके आधार पर परस्पर चर्चा करें एवं गुरुदेव द्वारा प्राप्त दृष्टिकोणके आधार पर समाधानका उचित प्रकल्प अपने क्षेत्रमें क्रियान्वित करनेकी योजना बनाएँ। योजना क्रियान्वित करें तथा आगामी सत्रोंमें उसकी सफलताकी समीक्षा करें । एवं परस्पर एक-दूसरेका कुशल-मङ्गल समाचार अवश्य पूछें । सद्भावपूर्वक एक-दूसरेको सवाघण्टे (७५ मिनट) नित्य उपासनाके लिए प्रेरित करें । एकाएक सवाघण्टेका समय न निकल पाने या अभ्यास न होनेकी स्थितिमें थोड़ा-थोड़ा समय निकाल कर धीरे-धीरे उसे सवाघण्टे तक ले जानेकी प्रेरणा प्राप्त करें तथा अन्योंको दें । एक बारमें

सवाघण्टेका समय न मिलने पर १५-१५ मिनट पाँच बारमें उपासना करें । प्रातः उठते ही १५ मिनट भगवद्भजन, स्नानके बाद १५ मिनट, मध्याह्न भोजनके पूर्व १५ मिनट, सायंकाल १५ मिनट एवं रात्रिमें सोनेसे पूर्व १५ मिनट इस प्रकार ७५ मिनट प्रतिदिन भजनका बल हो । घरसे बाहर कार्यालय, व्यवसाय आदिमें होनेसे या अन्य असुविधासे यदि पाँच बार १५-१५ मिनट समय निकलनेकी स्थिति न हो तो दिनमें एक या दो बार (प्रातः सायं)में ही सवाघण्टेकी उपासना, भजनका बल अवश्य अर्जित हो । उक्त विषयोंपर भी चर्चामें बल दे कर एक-दूसरेका मनोबल बढ़ाना चाहिए ।

सेवा तथा अर्थका प्रलोभन देकर विधर्मियों द्वारा हिन्दुओंको तेजीसे धर्मच्युत (धर्मान्तरण) किया जा रहा है । व्यक्ति-व्यक्ति तक पहुँचकर सद्भावपूर्ण सम्वादके माध्यमसे सनातन सिद्धान्तोंकी दार्शनिकता, वैज्ञानिकता तथा व्यवहारक्षमता प्रस्तुत कर, हम सरलता पूर्वक इस सङ्कटसे हिन्दुओंको बचा सकते हैं ।

सेवा -

१. जिस देवस्थान पर साप्ताहिक प्रकल्प क्रियान्वित हो वहाँकी स्वच्छताका अभियान ।
२. अन्य देवालय, आश्रम, विद्यालय, पुस्तकालय, चिकित्सालय, उद्यान, सरोवर आदि सार्वजनिक स्थलों पर स्वच्छता एवं विभिन्न सेवा प्रकल्पोंका क्रियान्वयन ।
३. विभिन्न क्षेत्रोंमें होने वाले पर्वों या महोत्सवोंमें सामूहिक रूपसे व्यव्यस्था स्थापित करना, जल, चिकित्सा (प्राथमिक), स्वच्छता आदिसे सम्बन्धित सेवा करना ।

एक रुपया और एक घण्टा

प्रत्येक हिन्दू परिवारसे प्रतिदिन १ रुपय तथा १ घण्टा निकालें इस प्रकार प्राप्त समय और सम्पत्तिका प्रयोग अपने ही क्षेत्र तथा क्षेत्रवासियोंको सुशिक्षित, सुरक्षित, सम्पन्न, सेवापरायण और स्वस्थ बनानेमें करें । इसके माध्यमसे सनातन धर्मकी रक्षाका बहुत बड़ा कार्य किया जा सकता है । वर्तमान समयमें ओडिशा प्राप्तमें वन्यक्षेत्रोंके अनेक गाँवोंमें आदित्यवाहिनी-आनन्दवाहिनीके सदस्य इस अभियानको दक्षतापूर्वक चला रहे हैं । जिससे उस क्षेत्रमें सनातनधर्मकी रक्षा तथा सेवाका महान् कार्य हो रहा है । साथ ही साथ एक रुपया और एक घण्टाके अभियानकी सफलताका एक आदर्श भी प्रस्तुत हुआ है । भारत, नेपाल तथा भूटानमें विशेषरूपसे वन, पर्वत तथा राज्य एवं राष्ट्रके सीमावर्तिक्षेत्रोंमें इस अभियानको क्रियान्वित करना वरदान सिद्ध होगा ।

सेना, सेवा तथा सम्पर्क

पूज्यपाद द्वारा तीन मार्गोंसे कार्य करनेका प्रारूप प्रस्तुत किया गया है ।

१. **भूगर्भमार्ग :** भूगर्भमार्गमें सेनाका निर्माण । शूरता, सुशीलता, ओजस्विता, अनुशासन तथा सझ-बूझ सम्पन्न सेनाका सेवा तथा सुरक्षामें प्रयोग ।

२. **भूमार्ग :** भूमार्गमें सेवाका प्रकल्प है ।

३. **नभोमार्ग :** आकाशमार्गमें व्यापक सम्पर्कका प्रकल्प है । सद्भावपूर्ण-सम्वादपूर्वक जनसम्पर्क तथा सोशल मिडियाके माध्यमसे पूज्यपादके लोककल्याणकारी वचनोंको जन-जन तक पहुँचानेका अभियान । जिसके माध्यमसे सहज ही सङ्गठन खड़ा होगा ।

सुरक्षा प्रशिक्षण

साप्ताहिक-प्रकल्पमें सफलता प्राप्त होनेके बाद नित्य (प्रतिदिन) प्रकल्प आरम्भ करना चाहिए । नित्य प्रकल्पमें भी सेवा, सत्सङ्ग आदिका प्रकल्प चलाया जाना चाहिए । साथ ही साथ विशेष रूपसे बाल-आदित्यवाहिनी एवं बाल-आनन्दवाहिनीको तथा अन्य शाखाओंके सदस्योंको भी सुरक्षाका प्रशिक्षण देना चाहिए । हमारे परम्परा प्राप्त अखाड़ोंका प्रकल्प प्रत्येक गाँव, नगरमें आरम्भ करना चाहिए, जिसमें मल्ल, कुश्ति, लाठी चलानेकी कला तथा आधुनिक जूडों, कराटे-कुङ्फूँ आदिका प्रशिक्षण देना चाहिए । वर्तमान समयमें राष्ट्रकी जो स्थिति हैं; उसमें प्रत्येक व्यक्तिको आत्मरक्षा, परिवार, समाज, सनातनधर्म तथा राष्ट्रकी रक्षाके लिए सैनिकके समान तैयार करना आवश्यक है । इस प्रशिक्षण प्रकल्पोंको दो सत्रोंमें भी क्रियान्वित किया जा सकता है-

१. प्रातः सत्रमें योगासन, प्राणायाम शिविर तथा प्रभातफेरीका प्रकल्प ।

२. सायं सत्रमें पूर्वोक्त सुरक्षा प्रशिक्षण शिविर

या

एक ही सत्रमें प्रातः या सायं योगासन, प्राणायाम शिविर तथा सुरक्षा प्रशिक्षण शिविर एक साथ चलाया जा सकता है।

प्रकल्पकी सफलताके लिए ध्यान देने योग्य बिन्दु

स्थानका चयन

प्रकल्पकी पूर्णसफलताके लिए उचित स्थानके चयनका महत्त्व है ।

१. किसी सनातन देवालयसे (जहाँ शास्त्रसम्मत भगवद्विग्रह ही प्रतिष्ठित हों) प्रकल्प आरम्भ करना सर्वोत्तम है; वहाँ सनातन

देवताओंके अनुग्रहसे विघ्ननाश और सफलता लाभ सहज ही होता है ।

२. देवालय सार्वजनिक हो तो उत्तम है ।

३. देवालय (प्रकल्पका स्थान) ग्राम, नगर या क्षेत्रके बीचमें हो ताकि यह प्रकल्प समाजकी दृष्टिमें आता रहे; इससे अन्य लोगोंको भी इसमें सम्मिलित होनेकी सहज भावना उदित होगी साथ ही साथ प्रकल्पमें सम्मिलित होने वाले व्यक्ति वहाँ सरलता पूर्वक पहुँच सकेंगे ।

४. प्रकल्पमें सम्मिलित होने वाले व्यक्तियोंके वाहन आदि रखनेका उचित स्थान हो ताकि आस-पास असुविधा उत्पन्न न हो । हमारे द्वारा उत्पन्न अव्यवस्थासे लोगोंके मनमें प्रकल्पके प्रति अनास्था उत्पन्न हो सकती है । अत: आरम्भसे ही सावधान रहना आवश्यक है ।

५. जहाँ प्रकल्प आरम्भ करना चाहते हैं वहाँ आस-पासके व्यक्तियोंकी अनुकूलता तथा सहभागिता पर अवश्य ध्यान दें एवं उन्हें किसी प्रकारकी असुविधा न हो इसका भी ध्यान रखें। (इस पवित्र प्रकल्पके प्रति सभीकी अनुकूलता ही प्राय: सम्भावित है ।)

६. देवालयोंमें प्राय: इस प्रकारकी अनुकूलता सुलभ होती है; ऐसे देवालय उपलब्ध न होनेकी स्थितिमें सस प्रकारकी अनुकूलता वाले आश्रम, सार्वजनिकस्थान आदिका चयन करना चाहिए।

७. उपयुक्त देवालय, आश्रम या सार्वजनिक स्थल आदि सुलभ न होनेकी स्थितिमें किसीके निजिस्थान पर भी प्रकल्प आरम्भ किया जा सकता है । किन्तु स्थानस्वामी सहज, सरल, सौम्य, उदार, लोकप्रिय तथा मृदुभाषी हो; ताकि लोगोंको वहाँ आनेमें प्रसन्नता हो, सङ्कोच न हो ।

नोट :-

महानगरोंमें पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण और मध्य यह पाँच विभाग (आवश्यकता पड़ने पर और भी) करके प्रत्येक क्षेत्रमें प्रकल्प क्रियान्वित करें ।

दिन तथा समयका निर्धारण -

१. जनसामान्यकी सुविधाके आधार पर दिन (वार) तथा समय तय करें । ताकि अधिक व्यक्ति बिना कठिनाइयोंके सम्मिलित हो सकें ।

२. पर्वोंके दिन तिथि आदिके आधारपर अपरिवर्तनीय हैं । अत: उन-उन तिथियोंपर ही उन-उन पर्वोंको मनाया जाएगा । किसी सामूहिक असुविधा जैसे कर्फ्यू आदि होनेकी स्थितिमें आपात-कालीन असुविधाकी स्थितिमें एक दो दिन आगे-पीछे किया जा सकता है । किन्तु सामान्य स्थितिमें पर्व अपनी निर्धारित तिथियोंमें ही मनाए जावेंगे ।

३. प्रकल्पके आरम्भ होनेके निर्धारित समयसे पूर्व ही सभी सदस्य निर्धारित स्थल पर पहुँच जावें तथा ठीक समयसे गोष्ठी आरम्भ एवं विराम करना चाहिए । ताकि तदस्योंके अन्य कार्य बाधित न हों ।

प्रकल्पका प्रचार -

१. प्रकल्प आरम्भ करनेसे पूर्व सभी समाचारपत्र-पत्रिकाओं, स्थानीय चैनल, व्यक्तिगत जनसम्पर्क तथा सोशलमिडियाके माध्यमसे संस्थाका नाम तथा परिचय, संस्थापक, प्रकल्पके स्वरूप, उद्देश्य, स्थान, समय आदिका भरपूर प्रचर-प्रसार कर लोगोंको उसमें सम्मिलित होनेका आह्वान करें ।

२. प्रकल्प आरम्भ होनेकी प्रेस-विज्ञप्ति चित्रसहित सभी पत्र-पत्रिकाओं, चैनल तथा सोशलमिडियामें प्रसारित करें । प्रकल्पमें

भक्तोंकी धर्म या ईश्वरसे सम्बन्धित जिज्ञासाओंका समाधान उनके माध्यमसे हो जाता था । और यदि कोई जटिल प्रश्न आ जाए तो प्राय: १०-१५ गावोंके बीज कोई ना कोई ऐसे प्रबुद्ध सन्त महापुरुष या विद्वान् होते थे जिनके माध्यमसे धर्म-ब्रह्म या राष्ट्र सम्बन्धित जिज्ञासाओंका समाधान हो जाता था । जिससे समाजमें चेतनाका सञ्चार था । किन्तु आधुनिक शिक्षा और भोग-विलासिताके चपेटमें आकर वर्तमानमें ऐसे प्रबुद्ध महापुरुष गिन-चुने ही शेष रह गए हैं। इसीसे संकट और अधिक गहरा हो गया है । अत: हमें मन्दिरोंको प्रशिक्षणकेन्द्रका रूप देनेकी आवश्यकता है । और सर्वप्रथम उनमें नियुक्त अर्चकोंको इस प्रशिक्षण प्रकल्पसे जोड़ कर इतना प्रबुद्ध बनानेकी आवश्यकता है कि वे मन्दिरमें आनेवाले भक्तोंको अपनी जीवनचर्या तथा वाणीसे सनातन सिद्धान्तोंकी दार्शनिकता, वैज्ञानिकता तथा व्यवहारक्षमताके प्रति आकर्षित तथा आस्थान्वित कर सकें । एक-एक मन्दिरका अपना क्षेत्र निर्धारण कर वहाँसे प्रशिक्षित सदस्य मन्दिर या संस्थाके पार्षदके रूपमें अपने-अपने क्षेत्रोंमें जनसम्पर्क कर लोगोंको मन्दिर तथा संस्थाके प्रकल्पसे जोड़े तथा एक-दूसरेके पूरक एवं पोषक बन कर कार्य करें । जिससे एक महान् जनक्रान्तिको जन्म दिया जा सकता है ।

मन्दिरमें आनेवाले सभी भक्तों तथा मन्दिरके क्षेत्रमें आनेवाले प्रत्येक परिवार तथा व्यक्तिको इस प्रकल्पसे जोड़ें । सभी क्षेत्रोंके मन्दिरोंको यदि इसी प्रकार तैयार किया गया तो निश्चितरूपसे सनातन-धर्मके आगे जो भी सङ्कट हैं उनका निदान हो जाएगा ।

''अन्योंकी दृष्टिमें असम्भव कार्य जिन्हें सम्भव दिखलाई देता है; वे महापुरुष ही गौरवशाली इतिहासकी रचना करते हैं ।'' जैसे भगवान् श्रीरामभद्रने परमसामर्थ्यसम्पन्न होने पर भी वानरी सेना तैयार कर लङ्का पर विजय प्राप्त की; उसी प्रकार हमें भी

केवल वानरी सेनाके समान पूज्य शङ्कराचार्य महाभागके इस महान् अभीयानमें अपने सामर्थ्यकी सीमामें सहभागिता प्रस्तुत करना है ।

धर्मसङ्घ-पीठपरिषद् और उसके अन्तर्गत आदित्यवाहिनी, आनन्द-वाहिनी, राष्ट्रोत्कर्ष अभियान, हिन्दूराष्ट्रसङ्घ और सनातन सन्तसमितिके मान्य सदस्योंके लिए अनुपालनीय नियम –

१. मानवोचित शीलकी सीमामें सबको उचित स्नेह, सम्मान तथा सुविधा प्रदान करनेका प्रकल्प ।

२. संयुक्त परिवारके संरक्षणका प्रकल्प ।

३. एशियामहाद्वीपके अन्तर्गत भारत, नेपाल और भूटान आदिको हिन्दू-द्वीप उद्घोषित करनेका प्रकल्प ।

४. अन्योंके हितका ध्यान रखते हुए हिन्दुओंके अस्तित्व और आदर्शकी रक्षा तदर्थ कटिबद्धता ।

५. शिक्षा, रक्षा, अर्थ और सेवा तथा जनसंख्याको सन्तुलित रखनेकी भावनासे सनातन वेदादि-शास्त्रसम्मत वर्णाश्रम व्यवस्थाके संरक्षण एवं संवर्द्धनका प्रकल्प ।

६. ऊर्जाके पृथ्वी, पानी, प्रकाश और पवन संज्ञक श्रोतको विकृत होनेसे बचाने और विशुद्ध करनेका प्रकल्प ।

७. तरु-लता-गुल्म आदि स्थावर प्राणियोंके और पशु-पक्षी मनुष्यादि जङ्गमप्राणियोंके सर्वविध उत्कर्षका प्रकल्प ।

८. 'देहके नाशसे जीवका नाश नहीं होता तथा देहके भेदसे जीवमें भेद नहीं होता' इस आध्यात्मिक तथ्यमें आस्थान्वित रहते हुए अपने अधिकारकी सीमामें वेदादि शास्त्रसम्मत कर्म, उपासना और ज्ञानके आलम्बनसे भव्य जीवन और जगत्की संरचनाका प्रकल्प ।

९. भोग और मोक्षके अविरुद्ध और अनुकूल जीवनयापनकी भावनासे स्वाध्यय, सत्सङ्ग, सङ्कीर्तन और सेवाका प्रकल्प ।

१०. सनातन मठ-मन्दिर तथा सती, गोवंश, गङ्गा आदि सनातन मानबिन्दुओंके संरक्षणमें दया, दान, दम (संयम)से समन्वित जीवनका उपयोग और विनियोग ।

११. प्रत्येक देश, प्रान्त, जिला आदिका कार्य करनेमें सुगमताकी दृष्टिसे पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण और मध्य नामक पाँच विभाग कर एक-एक विभागके लिए एक-एक संयोजककी नियुक्ति।

१२. संस्थाके उद्देश्यमें आस्थान्वित सज्जन, सूझ-बूझ सम्पन्न, सक्रिय और अनुशासित सदस्योंके चयन, प्रशिक्षण और नियोजनका प्रकल्प ।

१३. आस्थान्वित हिन्दु परिवारसे औसतन प्रतिदिन सुलभ एक रुपए और एक घण्टेका सम्बन्धित क्षेत्रके उत्कर्षमें उपयोग ।

१४. 'सद्भावपूर्ण संवादके माध्यमसे वेदादि शास्त्रसम्मत सुसंस्कृत, सुशिक्षित, सुरक्षित, सम्पन्न और सेवापरायण स्वस्थ और सर्वहितप्रद व्यक्ति तथा समाजकी संरचना' इस राजनीतिकी परिभाषाको क्रियान्वित करनेकी भावनासे व्यासपीठ और शासन-तन्त्रमें सामञ्जस्य साधनेका प्रकल्प ।

१५. सनातन परिधानका समादर ।

प्रार्थना एवं जयघोष

स्वस्त्यस्तु विश्वस्य खलः प्रसीदताम्
ध्यायन्तु भूतानि शिवं मिथो धिया ।
मनश्च भद्रं भजतादधोक्षजे
आवेश्यतां नो मतिरप्यहैतुकी ।।

(श्रीमद्भागवत ५.१८.९)

"हे प्रभो ! विश्वका कल्याण हो, दुष्ट दुष्टतासे विनिर्मुक्त होकर प्रमुदित हो । सब एक-दूसरेका हित चिन्तन करें । हमारा मन शुभमार्गमें प्रवृत्त हो तथा हमारी बुद्धि निष्कामभावसे आप स्वप्रकाश सदानन्दस्वरूप भगवान् श्रीहरिमें निमग्न हो ।"

धर्मस्य हि जयो भूयादधर्मस्य पराजयः ।
भूदात्प्राणिषु सद्भावो विश्वस्यास्य शिवं सदा ।।
गवां वै मन्त्रमूर्तीनां पुनर्भूयाज्जयो जयः ।
कलङ्को गोवधोद्भूतः प्रभो राष्ट्रादपैतु नः ।।
भूयाद्भारतमस्माकमखण्डं धर्ममण्डितम् ।
स्वामिनां करपात्राणां वर्द्धतां धर्मसंहतिः ।।
शम्भो हर हरेत्युच्चैर्महादेवेति गर्जनम् ।
सद्धर्मवर्त्मपान्थानामस्माकं राजतां भुवि ।।
शुभं भूयाद्धि विश्वस्य प्राणिनः सन्तु निर्भयाः ।
धर्मवन्तश्च मोदन्तां ब्रह्मज्योतिः समेधताम् ।।

—*—